स्वर्ण अवसर

(संस्कृत छात्रों के लिए)

यह एक महान् हर्ष की बात है कि काश्मीर शैवदर्शन जैसी उत्कृष्ट विद्या के पठन पाठन की परम्परा को वर्तमान युग में उच्छिन्न हो जाने से बचाने के लिए काश्मीर महाराजा डा० श्री कर्णसिंह जी के प्रोत्साहन तथा अनुरोध से जम्मू कश्मीर धर्मार्थ ट्रस्ट की ओर से श्रीनगर में झील डल के तट पर, निशात बाग के समीप, गुप्तगङ्गा नामक पवित्र तीर्थ पर एक उच्च स्तर के शिक्षा संस्थान की स्थापना की जा रही है। इस संस्थान का नाम "काश्मीर शैव मठिका" है।

मठिका में शास्त्री परीक्षा, या एम० ए० संस्कृत परीक्षा, या किसी अन्य समकक्ष परीक्षा में उत्तीर्ण हुए छात्र प्रविष्ट हो सकेंगे। वे तीन वर्ष की अवधि में यहां काश्मीर शैव दर्शन के सभी प्रमुख ग्रन्थों के अतिरिक्त दार्शनिक स्तोत्रों और भारत की सभी प्रमुख दर्शन-विद्याओं के अत्यावश्यक सिद्धन्तग्रन्थों की विधिवत शिक्षा प्राप्त करके सच्चे दर्शन शास्त्रज्ञ बन जाएंगे। प्रथम वर्ष और तृतीय वर्ष के अन्त पर काश्मीर विश्वविद्यालय की ओर से परीक्षाएं ली जाएंगी। दोनों परीक्षाओं में उत्तीर्ण छात्रों को काश्मीर शैव दर्शन में दर्शनाचार्य की उपाधि दी जाएगी।

प्रत्येक छात्र के लिए मठिका की ओर से लगभग १०० रुपए की छात्रवृत्ति का प्रबन्ध किया जाएगा। इस में से लगभग ८० रुपए छात्र के आवास, भोजन, बिजली, पानी, आदि पर व्यय होंगे और शेष २० रुपए प्रत्येक छात्र को ऊपरी व्यय के लिए नकद दिए जाएंगे।

प्रथम वर्ष की पढ़ाई सितम्बर १९६७ में आरम्भ होगी और प्रवेश प्राप्ति के लिए सच्चरित्र, पढ़ाई और आयु सम्बन्धी प्रमाण पत्रों सहित प्रार्थनापत्र मठिका के प्रबन्धक के पास ३१ अगस्त तक पहुंच जाने चाहिएं।

प्रबन्धक :

काश्मीर शैव मठिका,

गुप्तगङ्गा निशात बाग, श्रीनगर कश्मीर

तिथि २७—७—१९६७

इन्दु प्रिंटिङ्ग प्रेस, श्रीनगर